समग्र विवरण के सम्बन्ध में, निकट अवस्था की शाऱ-विषयक सबूतों के बाद चूर भाषा या अध्यात्मिक विवरणों के प्रति राजनीतिक, औद्योगिक तथा यात्रिक आन्दोलनों के विमुख मनुष्य वातावरण को परंपरा के समस्त जीवन -मूल्यों में भी बौद्धिकता और कहीं- कहीं अविवाह बाँटे भावित होते थे, जिन्हें फादूःखूःभव में, और-तिदिक दार्शनिकों के समानान्तर एक दार्शनिक विज्ञान भी घटता हुआ, जिसका चरम प्रस्तुत बीतीं शताब्दी में प्र-रयय गोरम चला है। इस दार्शनिकता के समानान्तर ही शाहिद्य में भी, जन- जनने, ठहर- आनन्द, जात-जातान, जीवन मूल्यों के प्रति एक उर्जान्तर की साहित्यिकता से तब भी समय हुआ, जब में प्रेमानन्द कॉर्टेंडर और विक्टोर कॉन्स्टेंट वारिक्स विवरणों के भाष्यों और भवनों में गिनियों के किन-विन-किन पहले रुप परम्परागत विवरणों में पहले भाषण के लिए, परन्तु यह प्रतिक्रिया इतनी शक्तिक ही कि वर्तमान बना, न केवल एक में, बल्कि उसके प्रभावमयि प्रमाणिक इंडिया और अमेरिका भी वास्तविक तथा उन श्री मो रूप को रूढ़ कर पाने में असमर्थ रहे।

मनुष्य की प्रकृति है कि वह व्यवधान की ओर अपेक्षाकृत रवाना के साथ ध्यान देता है। सूक्ष्म, एकाँका, छोटी-कहानी, रेखांकित, शायद वाद-विवाद, मनुष्य को वैरिजंड्रोता के व्यापक बीतने में त्वरता के साथ मन:सदोच प्रदान करने के लिए पर्याप्त लगे। केवल में स्वतंत्र इन सभी शाहिद-विवाहों में, जिनमें कहानी प्रभुव रही, वहीं पहले फुँड़, इंडिया और अमेरिका सवारिक सम्पन्न बन सका।
भारतवर्ष में कथा और आध्यात्मिका की जो प्रथा संस्कृत गद्देशों पे रही थी, वह प्राकृत मानवों के विकास के साथ ही स्वयं स्वयम हुई हो कर एक प्रकार के दुर्विधावादी लघुकाराग़ में प्रसिद्ध प्राकृत-भाषाओं, पती और जाति-क़थयों में उन दिनों तथा फिर वही उसका तोप भी हो गया।

अन्य साहित्यिक विद्याओं के समान ही बंगाल और महाराष्ट्र साहित्य परिषद को इस नयी विधा दे दर्शन प्रसारित हुआ और इसी भाषा-दर्शन के माध्यम से आध्यात्मिक - कहानी हिंदी में आयी। हिंदी में आये के परवाह, इसका एक स्वाभाविक, स्वतंत्रता पूर्व प्रसाद और प्रेमचंद्न में पराक्रम को प्राप्त होकर भी सीमित रह गया अर्थात परिवर्तन के आयी हिंदी-कहानी भी एक अन्य -दर्शन, भारतीय परिषद में स्वयं जीवन-मूल्य का एक भाण्डा बन बन कर रह गयी, परन्तु परिक्रम के बेले इस विकासकु ल ने आये के रोका नहीं, वह हिंदी-कहानी को भी बुझा रहा। भारतीय समाज में भी बड़ी लेखी के साथ जीवन-मूल्यों का विचार हुआ और जीवनी करते हैं उन सद्वार के रुपालाग़ हिंदी-कहानियाँ ने इस परिवर्तन की उपस्थिति को बढ़ाना और कहानी को एक स्वतंत्र प्रकार का नया शब्द प्रकार किया -- और दूरबीर और प्रभाविता के प्रति विश्वकुलस्वरूप दृष्टि ग्रहणकर देखे हुए, अस्तित्व में आ आ नए जीवन-मूल्यों को बुझाता है पकड़ा। इसी समाजमीत्र जीवन-मूल्यों को मनुष्य के बेलन और जीवन तक पहुँचाने के माध्यम के रूप में हिंदी-कहानी का भी प्रयोग किया जा रहा है।

हिंदी कथा - साहित्य तथा आध्यात्मिक कहानी को लेकर प्रभाव संबंध में प्रवर्तन और शोध - प्रवर्तन हिंदी में दिखे हुए, जिनका अर उगमित किया गया आध्यात्मिक प्रवर्तन, मनोस्वास्ति कुशलकियों और समाजमीत्र जीवन-मूल्यों के संबंध में, किस कहानी की संरचना वर्तमान में उदभव हो रही है, उसमें जिन नये जीवन - मूल्यों को प्रतिक्रिया की जा रही है, गम्भीर अध्ययन का यह गम्भीर विषय अब तक के शोधार्थियों से निरुपित रहा है।

प्रसिद्ध प्रस्तावित शोध- प्रवर्तन में शोधार्थियों का विन्यास प्रयत्न इन समाजमीत्र - जीवन - मूल्यों को आध्यात्मिक हिंदी कहानी की अवधारणा में घटित करना इंत है।

मनुष्य की सम्पत्ति के इतिहास के महत्वपूर्ण लघुकारों में, उसके जीने की जिह्वीविमा सार्वजनिक महत्वपूर्ण लघु है, जिसके कारण वह मनोत्सव और संस्कृति के विभिन्न क़ीटाणों को पता करता हुआ, अज के वैज्ञानिक लघु तर आ पहुँचा है। इस विकास यात्रा में, जो पढ़ाया मिलते हैं, उसमें मानवीय-काल की
लीर लालका का स्मरण बोध होता है। और इसी शय-यात्रा में उसके विचार, वर्तमान, क्ला, संस्कृति, ज्ञान, विज्ञान के वैदिक-विश्व विकास हैं। भारतीय समाज के विकास के दृष्टिकोण से उसके घटक मुन्यालय की प्रगति का कथाकार भी अपने विशेष प्रचार और संस्कृति में धार्मिक विश्व की अन्य सम्प्रदायों के समान ही है।

साथ ही आज के वैज्ञानिक विकास की स्वतंत्रता में, पिछले प्रकार के नामित संस्कृति द्वारा - द्वारा का एक वैश्विक भारतीय महान्य कर रहा है, वह भी, अन्य की दुनाने में सम सकारात्मक नहीं है। इसी अर्थ में, आज के भारतीय समाज के निर्देश तथा अर्थात्रंक विकास के प्रमुख आधार बन जाते हैं। परंतु बने ही समाज की पूर्व और पश्चिम विकास के निर्देश और अर्थात्रंक विकास के प्रमुख आधार बन जाते हैं। परंतु इस समाज की पूर्व और पश्चिम विकास के निर्देश और अर्थात्रंक विकास के प्रमुख आधार बन जाते हैं।

इस आरंभ मुन्यालय का श्रीमान संवत, उसकी अपनी वैभवीत केल्या है, पिछले क्ला का जीवन रक्षा करना अन्य है, जो प्रकार के उन समय राजस्थान में संगम भागी होता है। इस आरंभ मुन्यालय का ही उपलब्धि, उसकी अपनी वैभवीत केल्या है, पिछले क्ला का जीवन रक्षा करना अन्य है, जो प्रकार के उन समय राजस्थान में संगम भागी होता है।

इस आरंभ मुन्यालय का ही उपलब्धि, उसकी अपनी वैभवीत केल्या है, पिछले क्ला का जीवन रक्षा करना अन्य है, जो प्रकार के उन समय राजस्थान में संगम भागी होता है। इस आरंभ मुन्यालय का ही उपलब्धि, उसकी अपनी वैभवीत केल्या है, पिछले क्ला का जीवन रक्षा करना अन्य है, जो प्रकार के उन समय राजस्थान में संगम भागी होता है।

इसी का प्रणाम उसकी धार्मिक, विश्व, अर्थात्रंक, मानविक, वाणिज्यिक मान्यताएं हैं। यही मान्यताएं उसके मुन्यालय-वैश्विक की धार्मिक संबंधों के जीव के भी लागू होते हैं।

वैदिक कल का कुशल संस्कृति में इन जीवन-मुन्यालय का स्वभाव लोकोपकारिता अवस्था हमें भिखाता है और समाज रचना का एक वैदिक उप रचना वाहारी भी। परंतु उसका वैदिक कल में अर्थात्रंक संस्कृति के संघर्ष, एक वर्ण संस्कृति के दृष्टिकोण में उभरने लगता है और यह दंड क्रम: उन वर्ण की भूमिका के दंड को भी मुख्य करता है। ये दो वर्ण अर्थात्रंक और क्षत्रियों के थे। वैदिक कल-राज्यों पर आधमान होगया था, आज जैनिकालिक वैदिक के "आर्य-तत्त्व" - का विपरीत, क्षत्रिय कल का कर्म पदा। इसके विचारों के दंड से नैतिक धार्मिक मान्यताएं के दृष्टिकोण के भी मुख्य होता है।
में प्रदर्श होता है। इस्तीफे के भारत आयोग से भारतीय समाज की साधारणतया एक दुरुस्त संस्कृति के होते हैं और दंड का एक नया आयाम खता जाता है। नवीन जीवन रचना और मूल्य संपत्ति की आवश्यकता यह समाज अनुभव करता है। यह न होगा कि मध्यपूर्व भाषिक एवं क्षेत्र स्न्याय का सामाजिक उत्पादन, इसी बात का गणना है कि मानव मूल्यों के पुराने व्यवहार हो गए प्रकारों को आदर्श उदाहरण पर स्पष्ट कर उनकी नवीन अभिव्यक्ति की जाए। अन- न्यों के भारत आयोग से भारतीय समाज की अन्य प्रकार की शिक्षा है जूझना पड़ा और इस प्रकार अपने सामाजिक दंड का एक और मुख्यपत्र देखाकर करना पड़ा। इस प्रकार, नवीन नवीन जीवन रचना के शास्त्री आपने मूल्य नियोजन की प्र- तिवारी समस्याओं को इस समय ने स्वीकार किया और कमजोर अपने स्थापित मू- ल्य कुंजों को परिवर्तित - परिवर्तित करने हुए आज के गुंग तक आ पहुंचा। परन्तु पहले के गुंगों का दंड, मिलना सीधा और सरल था, आज की बदली हुई परिवर्तनाओं में यह उल्लम्ब है कातिल हो गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, जीवन को जो यथार्थ कुटुंबीय और आमतौर पर जीवन की रचना बदला और अंतर्दृष्टि मुद्दे के लिए अन्य आदर्श विकास हुई। राजनीति, संस्कृति, परिवार शिक्षा व्यवस्था सभी अन्य ने अनेक मूल्यों का विफल तोड़ा है। सभी प्रकार के जीवन मूल्य प्राप्त हुए। हो टूटने लोग और समाज की मुद्दे के सामने एक प्रकार की आदर्श होती है। अनोमी 

परन्तु "मूल्य" है व्यती और उनकी सामाजिक स्थिति रचना के ही है। इस प्रकार पर कोई विनिंबोल बेहद नहीं मिलती, जीवन रचना में "मूल्यों" की वर्ता नहीं ग्राप्त होती किन्तु जीवन के क्रान्ति- चक्रार्थ, काम्य उक्तम के स्वयं का विवेन अवयव मिलता है। इस विवेन में जीवन की आदर्श व्यवस्था का विवाह मूल स्थिति व ता शिक्षा प्राप्त है। पर- न्यों समाज और मध्यपूर्वी साधारण का मौलिक रहस्य, उन गुंगों की नैतिक बाल-प्राप्त और धार्मिक आंशिकों का उत्पादन करने में था। यह नहीं होता कि अंतर्दृष्टि व्यक्ति अंग के पूर्ण की समाज रचना का क्रान्ति आर- "थम्ब" - था, तो उनके फूलों को होना। बाह्य साधारण और धार्मिक मान- थारे ही कर्मवान्य वर्तम के रूप में प्रहार करती थीं। अत: इनके बीच के होने "मूल्यों" के तत्कालीन स्वयं की समस्त मात्रा बनाए रखें। "मूल्यों" की वास्तव- विक अंतर्दृष्टि अंग में ही प्राप्त होती है। पूरे अर्द्धपत्र में "मूल्यों" के स्वयं और उनकी अवधारणा के रूप में नाटक करने की उपजता की गई है।
वह इस प्रकार यह सिखा किया गया है कि "मुल्य"- "कामय अवश्य क्रेडिट"
"DESIREEABLES" की अवधारणाएं हैं। जो व्यक्ति और उसके विचार वैज्ञानिक-भौतिक-अर्थव्यय संबंधों को व्यवस्था करते हैं। यहाँ से उन विचार संबंधों का आधार भी स्थाप किया होता है। और उसी में व्यावस्था करने के लिए वर्ण-क्रम तथा कोई अन्य लोग भी आता है। तीनों परिश्रम के न्यून कर्म का स्वाभाविक ही है। इंक जीवन त्रूटि और सत्य की परिवर्तन की आकाशी स्तरता है, जहाँ युगीन आवश्यकताओं के अनुसार, उसकी व्यवस्था तथा व्यवस्थापन शीर्षक तथा संरचना के बिना भी बदला करते हैं और "मुल्य" भी ठहरी अन्य उन्हीं में से एक सोकील होता है। और "मुल्यों" के विचार स्वभाव को स्वाभाविक करने का अधिकार नहीं मिलता है। यह कह देने के कुछ "मुल्य"-"शास्त्र" होते हैं और कुछ शास्त्रात्मक-संस्था का सामान्य नहीं हो पाता। उलझ प्रत्ययों में इंप "मुल्यों"-"के व्यावहारिक और तौलिक प्रकार के संबंध वार्तालाप को ही स्वीकृत किया गया है। और इस संबंधात वह रास्ता होने के कारण "मुल्य"-"स्थिर प्रतिमाओं में कभी घटना नहीं हो सकते। इस दृष्टि से देखा जाए, तो मुल्य के अपने व्यावहारिक वर्तन मुल्य भी आधारों पर संबंध स्थापित होते हैं - के सामाजिक, ब. आर्थिक, ग. राजनीतिक। व्यावहारिक अवधारणा के व्यावहारिक जीवन के बीच रहने वाला संबंध तत्त्व का प्रवर्तक। प्रायः ही व्यक्ति की भौतिक-अपने विचार संबंध में, जिन आदर्श "क्रेडिट"-"DESIREEABLES" की धारणाएं बनाती हैं, व्यावहारिक जीवन की अवधारणा स्पष्टतः उसके तात्कालिक नहीं रख पाती। अतः मुल्य चुকी की अवधारणा में आवश्यक विचार व्यावहारिक जीवन की अवधारणाओं के वर्तन मुल्य का संतुलन हिन्दुस्तानी वेतन का तत्त्व बन जाता है। विश्लेषण: मुल्य की रचनात्मक वेतन इसी धाराक्रम पर व्यवस्था करनें को प्रस्तुत होती है। आपके का जुग हम पुराण, और विचार विचार वर्णित बनता है कि कोई भी एक दृष्टि जीवन की स्वर्णित व्यावस्था कर सके हैं समय नहीं है। अतः आप व्यक्ति अपनी पूर्व स्थापना, व्यावहारिक अवधारणा को व्यावहारिक शीर्षक दोनों से समाप्त करें की जेना चाहिए है, परन्तु उसके बीतार और सामाजिक दबाव इस्ते प्रकाश है कि वार्तालाप: इसे मुक्तिलिख पार पूर्व व्यावस्था अर्थात् अपरिमेयता हो पाना विश्व के का वात नहीं। यही कारण है कि व्यावहारिक अवधारणा का युग बन गया है। "क्रेडिट"-परिश्रम"-इसी मुक्ति संस्था की ओर लेता करते हैं। बैतकाँ कहा गया है कि "मुल्य"-"श्रेय" की अवधारणाएं हैं, अतः उनका मौलिक संबंध मुल्य की विचार वर्णित संबंधों से होता है। ये विचार वर्णित "मुल्य"-को मौलिक
शिक्षा द्वारा करते हैं और जीवन को समझने और देखने का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। पांचवें परिशिष्ट - में विचार दर्शनों का विशेषता परिपत्र " मूल्य " की केन्द्रीय ध्येयता के साथ उपस्थित किया गया है। इन प्रमुख विचार दर्शनों में, विश्लेषक सामाजिक " मूल्य संबंध "- के निर्माण को दिखा देने की कोशिश की है और इनके अतिरिक्त व्यक्ति प्रभावित हुआ है - महत्वपूर्ण हैं - मार्क्स का अनुप्रयोग भौतिकवाद, वार्सा ठार्किया का विकासवाद, विषमण्ड धार्मि का मनोविकल्पण, वार्सा- कामु आर्थ का ब्रस्टरवाद, मिल का व्यवस्थितवाद, भारतीय जीवन दर्शन का समस्यावाद और भारतीय रजनीश का कामाख्यातवाद। इन वर्ग पद्धतियों के प्रभावक केन्द्रीय बिन्दु तक ही शोध-पत्रों ने अपने दृष्टिकोण को लीटियरत रखा है, इनकी आवश्यकता - प्रकाशित वनार में जाने का प्रयास नहीं किया है। यहाँ तक भारत " मूल्य " की सामाजिक ध्येयता प्रयास हो जाती है और रोध का अंत चरण प्रारंभ होता है अथवा अभ्यास हिंदी कहानी की शारीरिक सीमा है। मूल्यों के परिशिष्ट के ही बाहर उसकार होता है। छठा परिशिष्ट - मूल्यों और अपने हिंदी भाषित का शारीरिक के पारस्य और अपने विशेष शारीरिक का विश्व करता है। वास्तव में, अभ्यास विशेष शारीरिक का त्योहार अपने मूल्यों के संबंध के बुद्धि है और अपने सामाजिक दायित्व को ही दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर रहा है। कहानी का रचना संबंध इस " मूल्य - व्यवहार " के प्रति सामाजिक सीमा है। 80 वें टेकर सन 80 तक की धर्म या धर्म ने विशेष भावों के वातावरण के संबंध में अब अपने " हिंदी कहानी "- जारी कर कहानी के मूल्य संबंध को स्पष्ट किया है। बाहर दश के प्रारंभ में ही उसकी वाम-बेलाना "समान्तर कहानी " अन्य दश के संबंध में, हिंदी कहानी का त्योहार जन संबंध के बोझकर सामाजिक शीर्ष मूल्यों के संबंध से अपनी भीमन संबंधता को मोड़िय किया। किंतु जीवन के संसार कहानी की यात्रा को लें तो कहल के बाद के जीवन में, कहानी के स्वर और भौतिका को अर्थ देने के प्रारंभ पर ला दुहाई। कहाना हो गया कि इस भीमन को अपनते हुए कहानी को अपने शिल्प के उपयुक्त और अपने आयुक्त को कुछ परीक्षित करना पड़ा है और जो उससे " किसानों " की अपेक्षा रखते हैं, उन्हें निराश होना पड़ा है। भारतीय परिशिष्ट - कहानी के शारीरिक संबंध को ही संबंध में व्याख्यातित करता है। सहेज कहानी के ध्वनि, प्रयोजन और इसके गठन के विविध उपयोगों अर्थ " निष्क " " प्रौढ " " बिन्दु " बार्त को अभ्यास के दृष्टि के परिप्रेक्षित करने की केंद्र की गई है। धारा हो कहानी के रचना संबंध और उसकी विवरणता के कहानी में प्रकट करण के मूल दृष्टियों का भी सिद्ध किया गया है। समीक्षा, आवश्यक और वातावरण शास्त्र के आधार और कहानी के रचना प्रदर्शनों को ही मोड़िय करने का प्रयास हुआ है। इस प्रकार यहाँ आकर " जीवन मूल्य " और " अभ्यास हिंदी कहानी "- के संबंध मूल्परस्पर
प्रस्तुत शोध - कार्य की पूर्ण करने में मुझे चिन मित्रों, गुजरात की प्रोफार और वहसे लगा आशीर्वाद मिला है, उनके प्रेम कृत्तिवर्द्धन लय- क्षत करना मेरा नेतिक कर्म हो जाता है। ऐसा हम में, मेरे श्रद्धा का प्रत्येक बार श्रुति श्री वारस्तित्रि जी की समर्थित है, जिन्होंने प्राप्ति से अन्त तक स्वयं अनुभव इतिहास तथा प्रोफार देखकर विकास रखा है। वास्तव में, उनके समर्थ निर्भर का हो यह प्रतिकृत है कि मैं आज इसे पूर्ण कर सका हूँ और उनके स्नेहपूर्ण आशीर्वाद के प्रति मेरा इश्क श्रद्धालू है। श्रीमाधु सलामी, हिंदी विभागपत्र, महाराजी गद्दी विष्णु जैन, देशराजन, को भी मैं समर्थ किर और नहीं रह सकता, जिन्होंने, अपने अनुभव इतिहास तथा प्रस्तुत शोध की व्यवस्था के दूर-दूर में मेरे मुख उपकृत किया है। मेरे भाषाओं स्वामी गोपाल शरमी व श्री आनंद निराली श्री शमशाह: जबहार नाले देवकिए विश्व विज्ञान ने सामाजिक के विभाग और उनके प्रारंभ में मुझे बराबर सहयोग दिया है। श्री श्रीराम श्रीवस्तवबन्धु श्री भारतीय प्रेमी जीमा निमा, कानपुर का सहयोग और प्रोफार भी मुझे बराबर अपने कार्य के प्रति बुझे रहने में सहायक रहा है। अतः इन सवी निर्मितों और गुजरात के प्रति मेरी हुकूम के बाहराही हैं। इसी संदर्भ में, मैं अपनी पसन्दी श्रीमाधु श्रीमातों के प्रति भी कुशल हूँ, जिन्होंने अपने श्रम, सहयोग और वृद्धि बराबर दिया है। जबकि जेरा मनोन्नत विविधता तो नहीं मानता है, उन्होंने साहसपूर्वक बुढ़कर उसे टूटाने के बावाया है। इस शोध के विकल्प में मुझे चिन पुस्तकालयों के अध्यक्षों के सहयोग मिलता रहा है, मैं उनके प्रति भी जागरूक हूँ। इनमें श्री मारवाडी पुस्तकालय, कानपुर, भारो सारे 100 पुस्तकालय, कानपुर, पश्चिम बांग्लाडेश, कानपुर,
के पुस्तकालयाध्यायें। इन सबके प्रति मे साभार कुरानता रहकत करता हूँ।

और अत्त में, शौध प्रारम्भ के प्रारम्भ में , स्वर्णिमत भाव-विचार भी दिए है। समाजपर जीवन-पूर्वक्रों और अभावान हिंदी-कहानी की जो भा-व-छवि मेरे मानव पतल पर चौकिया हुई है , उसी ही मेरे इनमें प्रस्तुत किया है। मैं भी अपनी अप्स छुट्टी से बन सका है, प्रस्तुत है।